17 जनवरी 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सम्यग्दर्शन-ज्ञान प्रधान चारित्र ही धर्म और साम्यभावरूप वीतराग चारित्र से परिणत आत्मा ही धर्मात्मा है।

- आ.कुन्दकुन्द व पंच परमागम,पृष्ठ :56

वर्ष : 29, अंक : 20 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (द्वितीय), 07 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

विधान एवं शिविर सम्पन्न

देवलाली (नासिक-महा.) : यहाँ मोहनलाल शाह की स्मृति में हंसमुखभाई शाह परिवार द्वारा दिनांक 24 दिसम्बर से 28 दिसम्बर, 06 तक पंचपरमेष्ठी विधान एवं शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन प्रात: विधान एवं गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचनोपरान्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अलिंगग्रहण पर मार्मिक प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित हेमचन्दजी हेम भोपाल, पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, पण्डित अनुभवप्रकाशजी मुम्बई, विदुषी उज्ज्वलाबेन शहा मुम्बई एवं विदुषी अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई का प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ मिला।

विधि विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा, पण्डित आशीषजी शास्त्री मौ एवं पण्डित राजकुमारजी बरगी ने संपन्न कराये।

पंचकल्याणक की वर्षगाँठ सम्पन्न

1. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जिनमंदिर बड़ा फुहारा में दिनांक 26 से 31 दिसम्बर, 06 तक पंचकल्याणक महामहोत्सव की वर्षगाँठ के मंगल प्रसंग पर 170 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य श्री मांगीलालजी कोलारस के सान्निध्य में सम्पन्न हुये। विधान का आयोजन श्री सतीशकुमारजी हुकमचन्दजी जैन (विशाल गारमेन्ट्स) परिवार द्वारा कराया गया। **ह्न विराग शास्त्री**

2. कोलकाता (पं.ब.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 28 दिसम्बर, 06 से 1 जनवरी, 2007 तक श्री 1008 महावीरस्वामी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की प्रथम वर्षगाँठ के पावन प्रसंग पर पंच विधान, व्याख्यानमाला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया।

दिनांक 28 दिसम्बर को विशाल जिनेन्द्र शोभायात्रा के उपरान्त श्री नेमीचन्दजी पाण्ड्या परिवार द्वारा जिनमंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण हुआ।

इस प्रसंग पर पाँच दिनों में श्री सीमंधर विधान, श्री आदिनाथ विधान,

(शेष पृष्ठ-4 पर....)

आध्यात्मिक सुसंस्कार शिविर सम्पन्न

स्तवनिधी (बेलगाँव-कर्ना.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल स्तवनिधी में श्री अखिल भारतीय दिगम्बर जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति, कोल्हापुर के तत्त्वावधान में दिनांक 24 से 30 दिसम्बर, 2006 तक आध्यात्मिक सुसंस्कार शिविर उल्लासमय वातावरण में सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन दि. 24 दिसम्बर को डॉ. विलासजी संगवे (डी.लिट्) कोल्हापुर तथा ध्वजारोहण श्री बी.आर.चौगुले स्तवनिधी के करकमलों से किया गया। इस अवसर मुख्य अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी जैन मंचासीन थे।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर के प्रवचनसार-चरणानुयोग चूलिका अधिकार एवं रात्रि में समयसार कलश 110 के आधार से मिश्रधर्म विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुए ।

आपके अतिरिक्त प्रतिदिन तीन सत्रों में पण्डित जितेन्द्रजी राठी जयपुर के समयसार गाथा-186 पर तथा पण्डित रोहनजी रोटे बाहुबली, पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, पण्डित अभिजीतजी अलगौंडर शेडबाल के भी सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर की व्याख्यानमाला में पण्डित जिनचन्दजी आलमान, पण्डित राजेन्द्रजी सांगावे, पण्डित शांतिनाथजी मगदूम, पण्डित संतोषजी मिणचे, पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील, पण्डित आलाप्पाजी हादीमणी, पण्डित दीपकजी अथणे के व्याख्यान हुए।

(शेष पृष्ठ-5 पर....)

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

प्रात: 6.35 से 6.40 के मध्य प्रारंभ

आजकल डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का समय प्रात: 6.40 बजे का ही है; फिर भी प्रवचन प्राय: 3-4 मिनिट पहले ही आरंभ हो जाते हैं। अनेक प्रयासों के बाद भी ठीक समय पर प्रवचन प्रारंभ करना संभव नहीं हो पा रहा है। अत: प्रवचन सुननेवालों से निवेदन है कि साधना चैनल 6.35 पर ही चालू कर लें।

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

ज्ञानेश, सेठ लक्ष्मीलाल की एवं मोहन की पापपंक में आकंठ निमग्न जीवन गाथा को सुनकर बहुत दुखी हुआ। लम्बी सांस लेते हुए उसने कहा ह्न ''खैर ! कोई बात नहीं, पापी तो थोड़े–बहुत अंशों में सभी होते ही हैं। मिथ्यात्व के फल में यह नहीं होगा तो और क्या होगा ? पर तुम्हारे जीवन में पापाचरण की कुछ अति ही रही। अस्तु: जो भी हुआ, अब उसे तो भूलना ही होगा। भविष्य में पुनरावृत्ति न हो, एतदर्थ देव–गुरु के स्वरूप को समझकर तदनुसार आचरण करने की कोशिश करना। सब ठीक हो जायेगा।''

मोहन एवं सेठ लक्ष्मीलाल ने नतमस्तक हो ज्ञानेश की बातों को शिरोधार्य किया और अधिकतम समय ज्ञानेश के सान्निध्य में रहने का मन बना लिया।

वहीं ज्ञानगोष्ठी में बैठा एक वकील सोच रहा था ह्न ''हम वकील लोगों ने सच्चाई को झुठला–झुठला कर अपने व्यवसाय को बदनाम तो किया ही, उसके जरिए पाँचों पापों एवं सातों व्यसनों में लिप्त बड़े–बड़े अपराधियों को उचित दण्ड दिलाने के बजाय झूठी दलीले दे–देकर उन्हें दण्ड मुक्त करा कर बार–बार अपराध करने के लिए प्रोत्साहित ही किया है। उनसे बड़ी–बड़ी फीस के सौदे करके, लाखों रुपये लेकर लखपति बनने के स्वप्न साकार करने की कल्पनायें करके मन ही मन खूब प्रसन्न भी हुए हैं। इस तरह मैं पापियों को प्रोत्साहन देकर प्रसन्न हुआ हूँ। यह भी तो रौद्रध्यान है। सचमुच मैंने अपने जीवन का बहुभाग यों ही अनुचित और अशुद्ध साधनों से धनसंग्रह में बर्बाद कर दिया'' ऐसे विचार व्यक्त करके उस वकील ने भी अपने पापकर्मका प्रायाश्चित्त किया और भविष्य में ऐसे कर्म न करने का मन में संकल्प कर लिया।

सेठ लक्ष्मीलाल, मोहन एवं अन्य सभी श्रोता समवेत स्वर में बोलेह्न हाँ, हाँ; गुरुजी ! हम सबकी लगभग यही स्थिति है।

वहीं बैठे एक नेताजी बोले ह्न ''हम ही क्या आज पूरा देश इसी स्थिति से गुजर रहा है, सभी इन्हीं आर्त और रौद्रध्यानों में ही आकंठ निमग्न हैं। यह बात जुदी है कि लोगों को यह पता नहीं है कि **ये भाव इतने दु:खद एवं आत्मघातक हैं**, नरक के कारण हैं। किसी ने इस दिशा में कभी सोचा ही नहीं, इसकारण सभी का यों ही जीवन व्यतीत हो रहा है। अब आपके सद्प्रयास से जब यह पता चल ही गया है तो अब इनसे बचने का मार्गदर्शन भी तो प्राप्त होना ही चाहिए। जो भी आप बतायेंगे, हम तो उससे लाभान्वित होंगे ही, हम इस बात को तन–मन–धन से जन–जन तक पहुँचाने का भी पूरा–पूरा प्रयास करेंगे।''

लोगों की रुचि एवं जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए ज्ञानेश ने सबको आश्वस्त किया ह्न ''भाई ! शास्त्रों में सबकुछ भरा पड़ा है, देखने की दृष्टि चाहिए तथा समझने के लिए थोड़े से समय की और तीव्र रुचि की आवश्यकता है। मैं भी कोशिश करूँगा और आप लोग भी थोड़ा–थोड़ा प्रयास करिए, कठिन कुछ भी नहीं है, असंभव भी कुछ नहीं है, दिशा बदलते ही दशा भी बदल जाती है। पुराने पापों का प्रायाश्चित्त करने और उनकी पुनरावृत्ति न करने से पाप पुण्य में भी बदल सकते हैं। आज यहीं तक, शेष कल। ●

* * *

सूर्य चारों ओर से अपनी लाली समेटता द्रुतगति से अस्ताचल की ओर बढ़ रहा था। गोधूली का समय था, धूल उड़ाती हुई गायें अपने बछड़ों की याद में दौड़ीं–दौड़ीं घर की ओर बढ़ रही थीं।

सूर्यास्त के पूर्व भोजन से निवृत्त होकर दिनेश विद्याश्रम के अधिकांश भाई–बहिन टहलने जाया करते थे।

विद्याश्रम के विश्रान्तिग्रह में ही ठहरे धनश्री, रूपश्री, विजया, धनेश, सेठ लक्ष्मीलाल और मोहन साथ ही साथ प्रतिदिन घूमने–फिरने उपवन में जाया करते थे। वहाँ आधा–पौन घण्टा शान्त व एकान्त वातावरण में बैठकर ज्ञानेश के प्रवचन में आये महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर परस्पर चर्चा–वार्ता किया करतेथे।

विगत दो दिनों से प्रवचनों में आर्त–रौद्रध्यान का स्वरूप एवं उनके दुष्परिणामों की दर्दभरी दास्तान सुनकर उनके पाँव तले की जमीन खिसकने लगी । उन सबकी आँखें तो पश्चात्ताप से झरते आंसुओं से गीली हो ही रही थीं, हृदय भी धड़कने लगा था। सभी के मन बोझिल हो गये।

धनेश ने साहस करके मुँह खोला और बात प्रारम्भ करते हुए कहा ह्न ''देखो, इन आर्त–रौद्र जैसे खोटे भावों में हम लोग इस समय आकंठ निमग्न हो रहे हैं, भविष्य में इनसे बचने का उपाय और पिछले पापों से छुटकारा पाने की विधि तो खोजनी ही होगी; अन्यथा जब हाथ से बाजी निकल जायेगी, तब अन्त समय में क्या होगा ?''

इतना सुनते ही धनश्री का तो हाल ही बेहाल हो गया, रूपश्री भी फूट–फूटकर रो पड़ी।

सेठ लक्ष्मीलाल के मुँह से निकला ह्न ''अहो ! हमें तो इन बातों की खबर ही नहीं थी। हमने तो ये सब सोचा ही नहीं, हम तो पुण्यकर्मो के फल में प्राप्त विषय भोगों में ऐसे तन्मय हो गये हैं कि मानो हमें स्वर्गो की निधियाँ मिल गई हों; पर ये तो हमें नरक में पहुँचाने के साधन सिद्ध हो रहे हैं।

ये संपत्तियाँ तो चारों ओर से विपत्तियाँ बनकर हमारे माथे पर मधुमक्खियाँ–सी मंडरा रही हैं, जो डंक मार–मारकर मरणासन्न कर देंगी।

ज्ञानेशजी के कहे अनुसार इनसे बचने का एकमात्र उपाय सम्यग्ज्ञान के सागर में डूब जाना ही है; एतदर्थ उस ज्ञान के सागर को प्राप्त करने की पात्रता और विधि क्या है ? हमें यह जानना होगा अन्यथा ये विपत्तियाँ हमारा पीछा छोड़ने वाली नहीं हैं।''

धनेश ने भी सेठ लक्ष्मीलाल की हाँ में हाँ मिलाई। सबने निश्चय

किया ह्न ''आज तो ज्ञानेश से इन पाप भावों से बचने के उपायों पर ही प्रवचन करने का निवेदन करेंगे।''

सेठ लक्ष्मीलाल ने ज्ञानेश से निवेदन किया ह्न ''आपने जो आर्त–रौद्र ध्यानों के बारे में विस्तार से विवेचन किया, तदनुसार तो हमारा पूरा परिवार इन पाप भावों में ही डूबा है। इनसे बचने का मार्गदर्शन करें।

ज्ञानेश ने कहा ह्न ''ऐसे भी बिजनिश हैं, जिसमें दूसरों को ऊपर उठाने से हम स्वयं ऊपर उठते जाते हैं। आप लोग जो भी धंधा करते हैं, उसका निरीक्षण करें यदि उसमें परोपकार करने के साथ स्वयं की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है तो उसे ही करें; अन्यथा यदि संभव हो तो बिजनिश बदल लें। ऐसा कोई बिजनिश करें, जिसमें अहिंसक तरीके से अपनी न्याय–नीति की आजीविका के साथ दूसरों का भी भला हो। ऐसा करने से आजीविका के साथ पुण्य लाभ भी हो सकता है।

सेठ लक्ष्मीलाल ने पुन: निवेदन किया ह्न ''धनेश, धनश्री एवं रूपश्री तो दिन–रात आँसू बहाया करती हैं। उन्हें भी आप इस पापपंक से पार होने का उपाय बताइए।''

ज्ञानेश ने सोचा ह्न ''इष्ट–अनिष्ट मिथ्या कल्पनायें हैं, इस कथन पर चर्चा करने से धनश्री एवं रूपश्री के मानस पर अनिष्ट संयोग एवं इष्ट वियोग से उत्पन्न हुए कष्टों के हरे–भरे घावों पर थोड़ी–बहुत मरहमपट्टी तो हो ही जायेगी। अत: पहले इष्ट–अनिष्ट की मान्यता कैसे मिटे ह्न यह समझाना ही ठीक है।''

ऐसा विचार कर ज्ञानेश ने कहा ह्न ''मूलत: कोई भी वस्तु या व्यक्ति अपने आप में न इष्ट है न अनिष्ट है; क्योंकि जिनके राग–द्वेष समाप्त हो जाते हैं, उन सिद्ध भगवन्तों के शब्द–कोष में इष्ट–अनिष्ट शब्द ही नहीं होते। इसी से सिद्ध है कि ह्न ये ''इष्ट–अनिष्ट'' शब्द मात्र राग–द्वेष की उपज है। मोह–राग–द्वेष के अभाव में इनका भी अस्तित्व नहीं रहता।

इष्टानिष्ट कल्पना व मोह–राग–द्वेष का परस्पर ऐसा घना संबंध है कि जहाँ मोह–राग–द्वेष होते हैं, वहाँ इष्ट–अनिष्ट कल्पना होती ही है और जहाँ इष्ट–अनिष्ट कल्पना होती है, वहाँ मोह–राग–द्वेष भी होते हैं।

तत्त्वज्ञान एवं वस्तुस्वरूप की समझ से जब परपदार्थ इष्ट व अनिष्ट भासित ही नहीं होते तो मुख्यत: राग–द्वेष व कषायें उत्पन्न ही नहीं होतीं। अपना कर्तव्य तो केवल तत्त्वाभ्यास करना और विश्वव्यवस्था और आत्मा–परमात्मा का स्वरूप समझना ही है। इसी के बल से आर्त–रौद्रध्यान का प्रभाव कम होते–होते क्रमश: अभाव होगा और धर्मध्यान का प्रारंभ होगा।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने लिखा है कि ''**कषाय–भाव पदार्थ के इष्ट–अनिष्ट मानने पर ही होते हैं और कोई पदार्थ इष्ट–अनिष्ट हैं नहीं; अत: पदार्थों को इष्ट–अनिष्ट मानना ही मिथ्या है। लोक में सर्व पदार्थ अपने–अपने स्वभाव के कर्त्ता हैं, कोई किसी को सुखदायक–दुखदायक, उपकारी–अनुपकारी नहीं है। यह जीव ही अपने परिणामों में उन्हें सुखदायक–उपकारी मानकर इष्ट जानता है अथवा दु:खदायक–अनुपकारी जानकर अनिष्ट मानता है, क्योंकि एक ही पदार्थ किसी को इष्ट लगता है, किसी को अनिष्ट लगता है। जैसे वर्षा किसी को अच्छी इष्ट लगती है किसी को अनिष्ट...'' एक लोकोक्ति है कि ह्न**

माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धुप्प।
साहू चाहे बोलना, चोर चाहे चुप्प।।

एक व्यक्ति को भी एक ही पदार्थ किसी काल में इष्ट लगता है, किसी काल में अनिष्ट लगता है तथा व्यक्ति जिसे मुख्यरूप से इष्ट मानता है, वह भी कभी अनिष्ट लगता है तथा जिसे मुख्यरूप से इष्ट मानता है, वह भी कभी अनिष्ट होता देखा जाता है। जैसे शरीर इष्ट हैं, परन्तु रोगादि सहित हो तो अनिष्ट हो जाता है। तथा जैसे मुख्यरूप से गाली अनिष्ट लगती है, परन्तु ससुराल में वही गाली इष्ट लगती है।

इसप्रकार पदार्थों में इष्ट–अनिष्टपना नहीं है। यदि पदार्थों में इष्ट–अनिष्टपना होता तो जो पदार्थ इष्ट है, वह सभी को इष्ट ही होना चाहिए और जो अनिष्ट है, वह सभी को अनिष्ट ही होना चाहिए; परन्तु ऐसा है नहीं। यह जीव कल्पना द्वारा इष्ट–अनिष्ट मानता है, यह कल्पना झूठी है।''

इस कथन से यह सिद्ध हुआ कि पदार्थों को इष्ट–अनिष्ट मानकर उनमें राग–द्वेष करना मिथ्या है।

देखो, भाई ! दु:खी होने से काम नहीं चलेगा। प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने की एक विधि होती है। उसे अपनाना पड़ेगा।

एतदर्थ प्रथम शास्त्र स्वाध्याय द्वारा अपने ज्ञान स्वभावी भगवान आत्मा के विषय में इतनी बातों का निश्चय करो कि ''मैं कौन हूँ, मेरा क्या स्वरूप है ? फिर पर की प्रसिद्धि करने में हेतुभूत जो इन्द्रियाँ हैं, उन पर से अपने उपयोग को हटाकर आत्मसम्मुख करने का प्रयास करो। एतदर्थ **पर के कर्ता–कर्म बनने के भार से निर्भार होना होगा, विश्व की कारण–कार्य व्यवस्था समझना होगी, यदि हम वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त और कर्मसिद्धान्त में पुण्य–पाप मीमांसा को समझ लें तो धीरे–धीरे आर्तध्यान एवं रौद्रध्यान होगा ही नहीं।**

यदि हमारा आत्मा–परमात्मा से सही अर्थों में परिचय हो जाय, उनसे प्रीति हो जाय तो वे बारम्बार हमारे ध्यान में आने लगेंगे। जिनसे हमारा घनिष्ठ परिचय और प्रीति हो जाती है, वे हमारे ध्यान में आये बिना नहीं रहते। अतः आत्मा–परमात्मा से परिचय करो, प्रीति स्वतः हो जायेगी और स्मरण होने लगेगा। यही रीति है धर्मध्यान करने की।

ज्ञानेश का धर्मध्यान पर हुआ सटीक प्रवचन सुनकर सबकी समझ में आ गया कि जब तक हम किसी विषय को जानेंगे–पहचानेंगे नहीं, तब तक उसके प्रति प्रीति ही उत्पन्न नहीं होगी। प्रीति के बिना प्रतीति नहीं आयेगी, आत्म विश्वास नहीं होगा और आत्मविश्वास के बिना तो दुनिया में कोई भी काम करना संभव नहीं है, फिर धर्म–ध्यान कैसे हो सकेगा ? अत: सबने ज्ञानेश की बात का अनुकरण करने का मन बना लिया। ●

जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्म साधना केन्द्र (आत्मार्थी ट्रस्ट) दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 24 से 31 दिसम्बर, 06 तक शीतकालीन 'जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर' का आयोजन किया गया; जिसमें दिल्ली, उत्तरप्रदेश एवं हरियाणा के कुल 22 स्थानों पर एक साथ शिविर लगा।

सम्पूर्ण शिविर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के निम्नांकित 31 विद्वानों के सान्निध्य में अनेक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

जिसके अन्तर्गत **आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली में** पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, **मॉडल बस्ती में** पं. प्रतीकजी शास्त्री राँझी, **राजा बाजार में** पं. अभिलाषजी शास्त्री कोटा, **शिवाजी पार्क में** पं. नितिनजी शास्त्री खडैरी एवं पं. उमेशजी शास्त्री अक्कीवाट, **बैंक एन्क्लेव में** पं. सुमितजी शास्त्री टीकमगढ़, **मोरी गेट में** पं. अभिषेकजी शास्त्री केलवाड़ा, **विश्वास नगर में** पं. चैतन्यजी शास्त्री बकस्वाहा, **रोहिणी नगर में** पं. पंकजजी दहातोंडे परली, **शंकर नगर में** पं. अनेकान्तजी शास्त्री मुम्बई, **पीरागढ़ी में** पं.विजयजी शास्त्री मोडी, **चाँदनी चौक में** पं. कीर्तिकुमारजी पाटील वसगडे, **पुष्पांजलि एन्क्लेव में** पं. नितिनजी शास्त्री सेमारी, **छपरौली में** पं. शैलेन्द्रजी शास्त्री पण्डा, **बहादुरगढ़ में** पं. नितिनजी शास्त्री सेमारी एवं पं. अविनाशजी पाटील शेडबाल, **फरीदाबाद में** पं. अभिजीतजी पाटील वसगडे, **खेकड़ा में** पं. संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा एवं पं. धवलजी गांधी नातेपुते, **नोएडा में** पं. विनयजी शास्त्री बूँदी एवं पं. सौरभजी शास्त्री कर्रापुर, **गंगेरू में** पं. मिलिन्दजी केटकाले कबनूर, **खतौली में** पं. तन्मयजी शास्त्री खनियांधाना एवं पं. अंकितजी शास्त्री कोलारस, **सहारनपुर में** पं. वीरचन्दजी शास्त्री लांडनू, **मेरठ में** पं. विवेकजी शास्त्री सागर एवं पं. रमेशजी शास्त्री नल्लूर, **सोनागिर में** पं. सचिनजी शास्त्री गढ़ी आदि विद्वानों द्वारा सभी स्थानों पर तीनों समय प्रवचन, प्रौढ़–बाल कक्षा, जिनेन्द्र पूजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई।

शिविर में कुल 1000 बच्चों एवं 800 महिला–पुरुषों ने तत्त्वज्ञान का रसास्वादन किया। अंतिम दिन सभी स्थानों पर परीक्षा ली गई ।

1 जनवरी 07 को आत्मार्थी ट्रस्ट में रत्नत्रय मंडल विधान के साथ ही शिविर समापन सामारोह एवं नूतन वर्षाभिनंदन का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के प्रवचन का लाभ मिला। विधि विधान पं. संजीवजी एवं पं. राकेशजी शास्त्री दिल्ली ने संपन्न कराये।

सम्पूर्ण शिविर बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन तथा पं. निकलंकजी शास्त्री कोटा एवं पं. आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ के कुशल संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

25 से 31 जनवरी, 07	बीना	पंचकल्याणक
02 से 06 फरवरी, 07	मंगलायतन	वार्षिकोत्सव
15 से 21 फरवरी, 07	अलवर	पंचकल्याणक

वेदी शिलान्यास कार्यक्रम

सिवनी (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल स्वाध्याय मन्दिर में पंचबालयति जिनेन्द्र प्रभु की प्रतिमाएँ विराजमान करने हेतु दिनांक 3 एवं 4 जनवरी 2007 को द्विदिवसीय श्री पंचबालयति मण्डल विधान एवं वेदी शिलान्यास का मंगल आयोजन किया गया।

वेदी शिलान्यासकर्ता डॉ. के. सी. भारिल्ल परिवार सिवनी थे। इस विशिष्ट आयोजन में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिंदवाड़ा, पण्डित राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर एवं इंजी. पण्डित संजयजी पुजारी खनियाँधाना के मंगल प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा एवं पण्डित राजकुमारजी बरगी ने शुद्ध आम्नाय अनुसार सम्पन्न कराये।

(पृष्ठ–1 का शेष ...कोलकाता)

श्री भरत–बाहूबली विधान, श्री शांतिनाथ विधान एवं श्री महावीरस्वामी विधान का आयोजन किया गया।

विधि–विधान के समस्त कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के सान्निध्य में पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़ एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर के मधुर स्वरों तथा सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा द्वारा आध्यात्मिक भजनों सहित सम्पन्न हुये।

इस मांगलिक अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के प्रतिदिन दोनों समय ग्रन्थाधिराज समयसार पर सरस शैली में मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। एक दिन ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' का प्रवचन हुआ।

एक दिन पं. अभिनयजी शास्त्री द्वारा निर्देशित 'पुण्य–पाप अदालत में' नाटिका का मंचन हुआ तथा उन्हीं के सान्निध्य में वीतराग–विज्ञान पाठशाला के बालकों द्वारा लघु कार्यक्रमों की ज्ञानवर्धक प्रस्तुति की गई।

सभी कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन एवं श्री हर्षदभाई शाह के संचालन में सम्पन्न हुये। कार्यक्रम में मुमुक्षु मण्डल के प्रमुख श्री बालचन्दजी पाटनी एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के समस्त पदाधिकारियों का सक्रिय सहयोग रहा। ●

215 घण्टे के प्रवचन एक सी.डी. में

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के महत्त्वपूर्ण 215 घंटों के प्रवचनों की एक डी.वी.डी. मात्र 100/- रुपये में प्राप्त करें।

प्राप्ति स्थल ह्न पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर–302015 (राज.)।

विधान संपन्न

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ सिद्धक्षेत्र संरक्षक कमेटी में मुमुक्षु मंडल गाँधीनगर, दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 25 दिसम्बर से 1 जनवरी 07 तक श्री इन्द्रसेन जैन परिवार (पारस गारमेन्ट्स) द्वारा श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। प्रतिदिन पं. संदीपजी शास्त्री एवं पं. पूरनचन्दजी मौ के प्रवचन हुए एवं पं. सचिनजी शास्त्री गढ़ी द्वारा बालकक्षा के माध्यम से बालकों को संस्कारित किया गया। विधि विधान के संपूर्ण कार्यक्रम पं. संदीपजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पं. अमितजी शास्त्री फुटेरा, पं. सचिनजी शास्त्री गढ़ी, पं. पूरणचंदजी मौ द्वारा सम्पन्न हुए। समापन समारोह की अध्यक्षता सोनागिर के मंत्री श्री ज्ञानचंदजी एडवोकेट ने की एवं मुख्य अतिथि भगवानदासजी ग्वालियर एवं महेशचन्दजी दिल्ली थे।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सानन्द सम्पन्न

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर की रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में दशम गोष्ठी **चार अभाव** विषय पर रखी गई। इसकी अध्यक्षता पं. जितेन्द्रजी राठी, जयपुर ने की। गोष्ठी के श्रेष्ठ वक्ता मिथुन कुदाली एवं वी. रमेश नल्लूर रहे। संचालन धीरज जैन जबेरा एवं मंगलाचरण पुलकित जैन इटारसी ने किया।

2. इसी शृंखला में एकादश रविवारीय गोष्ठी **मिथ्यात्व : दुःख का एकमात्र कारण** विषय पर रखी गई, जिसकी अध्यक्षता पं. भागचन्दजी शास्त्री, जयपुर ने की। गोष्ठी के श्रेष्ठ वक्ता रोहन रोटे एवं निखिल जैन रहे। संचालन निपुण जैन टीकमगढ़ एवं मंगलाचरण सूरज मगदुम ने किया।

3. **छहढ़ाला : समयसार का लघुरूप** विषय पर द्वादश रविवारीय गोष्ठी विशेष रूप से उपाध्याय वर्ग के लिए रखी गई। अध्यक्षता पं. प्रवीणजी शास्त्री ने की। अनेकान्त दिवाकर एवं विवेक मोदी दलपतपुर श्रेष्ठ वक्ता चुने गये। संचालन मुकुन्द ढोके एवं मंगलाचरण जिनदत्त पाटील ने किया।

ह्न संयोजक, रोहन रोटे एवं अंकुर जैन

(पृष्ठ–1 का शेष ...स्तवनिधी)

साथ ही गुरुकुल के विद्यार्थियों के लिए पण्डित रोहनजी रोटे द्वारा छहढ़ाला, पण्डित प्रसन्नजी शेटे द्वारा जिनधर्म प्रवेशिका एवं पण्डित अभिजीतजी अलगौंडर द्वारा सामान्य तत्त्वज्ञान की कक्षा ली गई। प्रतिदिन प्रात: श्रीमती अश्विनीजी शेटे कोल्हापुर द्वारा योग पर कक्षा ली गई।

इस अवसर पर संगीतमय 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील माणकापुर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

दिनांक 30 दिसम्बर को समापन समारोह की अध्यक्षता श्री श्रीधरजी हेरवाडे (सम्पादक–सन्मति मासिक) ने की। सभा का संचालन पण्डित जिनचन्दजी आलमान ने किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम के संचालक श्री अभयजी अथणे व श्री बी.आर.चौगुले तथा सर्वोदय स्वाध्याय समिति के समस्त सदस्यों का अत्यधिक सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर व विधान आमन्त्रणकर्त्ता श्रीमती इन्दुमति अण्णासाहेब खेमलापुरे घटप्रभा एवं श्री बापूसाहेब कल्लापाजी नरदेकर कुपवाड़ थे। **ह्न शांतिनाथ खोत**

शिविर एवं स्नेह-सम्मेलन मनाया

मुम्बई : यहाँ इस्टर्न मॉल, मलाड (पूर्व) में दिनांक 17 दिसम्बर 2006 को के.के.पी.पी.एस. उज्जैन के तत्त्वावधान में पहला शिविर एवं स्नहे–सम्मेलन 825 साधर्मी बंधुओं की उपस्थिति में मनाया गया।

शिविर में पण्डित श्री विमलदादाजी झांझरी उज्जैन, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित रमणीकभाई सांवला, पण्डित विरागजी जैन आदि विद्वानों के मार्मिक प्रवचन हुये।

सम्मेलन एवं शिविर में पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, श्री नागेशजी पिड़ावा, श्री अरहंतप्रकाशजी झांझरी, पण्डित हेमचन्दजी हेम, ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी लुहाडिया, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री एवं पण्डित ज्ञायक शास्त्री आदि विद्वान उपस्थित थे।

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री के.सी.जैन छाबड़ा ने की। मुख्यअतिथि श्री जे.के.जैन काला थे।

शिविर का संयोजन श्री अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन एवं डॉ. सुभाषजी चांदीवाल मुम्बई ने किया।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव

मौजपुर (अलवर–राज.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के जीर्णोद्धार के प्रसंग पर दिनांक 3 जनवरी से 5 जनवरी, 2007 तक वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में पूरे गाँव के जैन/जैनेत्तर लोगों ने भाग लिया। विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री एवं पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर के सान्निध्य में पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगामा, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा व पं. पूनम जैन ने सम्पन्न कराये।

उक्त विद्वानों के द्वारा ही जैनधर्म के सामान्य स्वरूप पर प्रवचन एवं कक्षाओं का आयोजन भी किया गया।

चैतन्यधाम में चैतन्य की गूँज

अहमदाबाद (गुज.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, प्रांतीय शाखा गुजरात द्वारा दिनांक 22 से 27 दिसम्बर 06 तक **चैतन्यधाम** में अष्टम तत्त्वज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन हुआ।

यहाँ सुबह 5.30 से रात्रि 10.00 बजे तक निरंतर तत्त्वज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित हुई, जिसमें पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा मोक्षशास्त्र, पण्डित शैलेषभाई तलोद द्वारा समयसार गाथा 6, पण्डित बाबूभाई फतेपुर द्वारा समयसार गाथा 320, पण्डित श्री निलेषभाई मुम्बई द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी तथा पण्डित इन्दुभाई मोरबी द्वारा समयसार गाथा 75 पर सरल सुबोध शैली में कक्षाएँ ली गई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन अनीभाई ताराचंद गाँधी एवं मंत्री मुकेशभाई ने किया। कार्यक्रम में **चैतन्यधाम** के समस्त ट्रस्टीगणों एवं अमृतभाई मेहता फतेपुर का विशेष सहयोग रहा। शिविर श्री राजकुमारजी जैन (सोगानी) भीवंडी के सौजन्य से लगाया गया। **ह्न प्रतीक भाटा**

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 67

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

जिसप्रकार एक किताब को पकड़ने के लिए यह जरूरी नहीं है कि पूरी किताब को पकड़ा जाय, उस किताब का एक कोना पकड़ कर भी पूरी किताब को पकड़ा जा सकता है; उसीप्रकार आत्मा का एक धर्म ग्रहण करने पर पूरे आत्मा का ग्रहण किया जा सकता है; लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमें आत्मा का एक धर्म अभीष्ट नहीं है; अपितु धर्मी आत्मा ही अभीष्ट है। धर्मी का तात्पर्य धर्मात्मा नहीं, अपितु अनंत धर्मों का अधिष्ठाता द्रव्य है।

हमें धर्मों को ग्रहण नहीं करना है, अपितु धर्मी को ग्रहण करना है। एक-एक धर्म तो नय का विषय है तथा सम्पूर्ण धर्मी प्रमाण का विषय हैं। हमें नय के विषय को नहीं, अपितु प्रमाण के विषय को ग्रहण करना है।

अनन्त गुणों का अखण्ड पिण्ड भगवान आत्मा प्रमाण का विषय है।

श्रुतज्ञान प्रमाण से जानी हुई वस्तु अनुभव का विषय है और अनुभव स्वयं प्रमाण है। धर्मी प्रमाण का विषय है तथा धर्म नय का विषय हैं।

गुरुदेवश्री के प्रवचनों के संग्रह नयप्रज्ञापन में उन्होंने कहा है कि धर्म को नहीं, अपितु धर्मी को ग्रहण करना है; क्योंकि धर्मी प्रमाण का विषय है।

47 नयों की चर्चा में आचार्यदेव ने सबसे पहले द्रव्यनय और पर्यायनय को लिया; किन्तु ये द्रव्यनय और पर्यायनय द्रव्यार्थिकनय और पर्यायार्थिकनय की भाँति नहीं है, उनसे एकदम भिन्न हैं।

आत्मा के अनंत धर्मों में एक 'द्रव्य' नामक धर्म है तथा एक 'पर्याय' नामक धर्म है। यह 'द्रव्य' नामक धर्म गुणों के समूह वाला द्रव्य नहीं है; अपितु आत्मा के अनन्त धर्मों में से एक धर्म का नाम द्रव्य है।

'द्रव्य' शब्द का एक यह भी अर्थ है ह्न यह बात बड़े-बड़े पण्डितों के ध्यान में नहीं है। लोग 'पर्याय' नामक धर्म और गुणों के परिणमनरूप पर्याय ह्न इन दोनों को एक ही समझते हैं; जबकि यह बात प्रवचनसार में तो लिखी ही है, नयप्रज्ञापन में भी है तथा मैंने 'परमभावप्रकाशक नयचक्र' में इस पर विशेष ध्यान आकर्षित किया है; फिर भी इस ओर लोगों का ध्यान जाता ही नहीं है।

वास्तव में आचार्यदेव ने 47 नयों का नहीं, अपितु आत्मा के 47 धर्मों का वर्णन किया है। नय तो उनको विषय बनानेवाले ज्ञान के अंश हैं।

सर्वप्रथम द्रव्यनय और पर्यायनय को समझाने के लिए आचार्यदेव ने पट और तन्तु का उदाहरण दिया है। पट में अनेक ताने-बाने होते हैं। जब कपड़ा बुना जाता है, उस समय जो धागा लम्बाई में रहता है, उसे ताना कहते हैं तथा जो धागा चौड़ाई में रहता है, उसे बाना कहते हैं।

उस वस्त्र को यदि वस्त्रमात्र की दृष्टि से देखेंगे तो वस्त्र ही दिखेगा, ताना-बाना नहीं दिखेंगे। कपड़े में जो ताना-बाना हैं, वे वस्त्र के ही अंश हैं। यदि कपड़े को ताने-बाने के रूप में देखा जाय तो ताना-बाना ही दिखेगा, कपड़ा नहीं दिखेगा।

उसीप्रकार द्रव्य में एक ऐसा धर्म है जो द्रव्य के तिर्यक् प्रचय और ऊर्ध्वता प्रचय को जोड़ता है, उस धर्म का नाम द्रव्य है। आत्मा को भी यदि द्रव्यनय से देखा जाय तो वह गुणपर्यायरूप नहीं; अपितु गुणपर्याय का अखण्ड पिण्ड दिखाई देगा; द्रव्यनय से न तो उसमें गुण दिखाई देंगे, न ही प्रदेश और न पर्यायें।

इसप्रकार यह द्रव्यनय और पर्यायनय का संक्षिप्त स्वरूप है। इस विषय को समझने के लिए 'परमभावप्रकाशक नयचक्र' का निम्नांकित कथन उपयोगी है।

''यद्यपि वस्त्र में अनेक ताने-बाने होते हैं, विविध आकार-प्रकार होते हैं, विविध रंग-रूप भी होते हैं; तथापि सबकुछ मिलाकर वह वस्त्र वस्त्रमात्र ही है। ताने-बाने आदि भेद-प्रभेदों में न जाकर उसे मात्र वस्त्र के रूप में ही देखना-जानना द्रव्यनय है; अथवा द्रव्यनय से वह वस्त्रमात्र ही है। ठीक इसीप्रकार चेतनास्वरूप भगवान आत्मा में ज्ञान-दर्शनरूप गुण व पर्यायें भी हैं, तथापि गुणपर्यायरूप भेदों को दृष्टि में न लेकर भगवान आत्मा को एक चैतन्यमात्र जानना द्रव्यनय है; अथवा द्रव्यनय से भगवान आत्मा चिन्मात्र है।[१]''

यहाँ द्रव्यनय और पर्यायनय का विशेष वर्णन करना संभव नहीं है; अतएव पाठकों को अपनी जिज्ञासा की पूर्ति लेखक की कृति 'परमभाव-प्रकाशक नयचक्र' के 'सैंतालीस नय' वाले प्रकरण से करना चाहिए।

द्रव्यनय और पर्यायनय के बाद आचार्यदेव ने सप्तभंगी से संबंधित नयों का वर्णन किया है। मैं एक बात यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि 47 नयों में 36 नय तो युगल के रूप में हैं तथा 7 नय सप्तभंगी के हैं और 4 नय निक्षेपों के नामवाले हैं।

सप्तभंगी संबंधी सात नय इसप्रकार हैं ह्न (१) अस्तित्वनय, (२) नास्तित्वनय, (३) अस्तित्व-नास्तित्वनय, (४) अवक्तव्यनय, (५) अस्तित्व-अवक्तव्यनय, (६) नास्तित्व-अवक्तव्यनय तथा (७) अस्तित्व-नास्तित्व-अव्यक्तत्वनय।

इन नयों के विषयभूत सात भंगों में तीन भंग असंयोगी, तीन भंग द्विसंयोगी और एक भंग त्रिसंयोगी है।

आत्मा में एक अस्तित्व नाम का धर्म है और एक नास्तित्व नाम का धर्म है; उस अस्तित्व नामक धर्म को विषय बनाने नय को अस्तित्वनय कहते हैं तथा नास्तित्व नामक धर्म को विषय बनानेवाले नय को नास्तित्वनय कहते हैं।

आत्मा में एक अस्तित्व-नास्तित्व नामक धर्म भी है, यह धर्म अस्तित्वधर्म तथा नास्तित्वधर्म का मिलाजुला रूप नहीं है, अपितु पृथक् ही है। जिसप्रकार एक 'बिहारी' नाम का व्यक्ति हो, दूसरा 'लाल' नामक व्यक्ति हो तथा तीसरा 'बिहारीलाल' नामक व्यक्ति हो, तो वह बिहारी लाल नामक व्यक्ति बिहारी और लाल नामक व्यक्तियों से भिन्न ही है,

उन दोनों का मिला–जुला रूप नहीं। उसीप्रकार आत्मा का अस्तित्व–नास्तित्व नाम का धर्म अस्तित्वधर्म और नास्तित्वधर्म से पृथक् ही है। 'अस्तित्वधर्म और नास्तित्वधर्म का मिला–जुला रूप नहीं है।'

इसीप्रकार आत्मा में एक 'अवक्तव्य' नामक धर्म है। यहाँ यह नहीं समझना चाहिए कि हम वाणी से बोल नहीं सकते, इसलिए अवक्तव्य है; क्योंकि नहीं बोल पाना हमारी कमजोरी है। उससे आत्मा के धर्म का कोई संबंध नहीं। वास्तव में आत्मा में ही एक ऐसा धर्म है, जिसके कारण आत्मा को वाणी द्वारा नहीं कहा जा सकता है।

इसीप्रकार अस्तित्व–अवक्तव्यनय को भी ऐसा नहीं समझना चाहिए कि यह अस्तित्वनय और अवक्तव्यनय का मिलाजुला रूप है। यह एक स्वतंत्र धर्म है; जिसे विषय बनानेवाले नय को अस्तित्व–अवक्तव्यनय कहते हैं। इसीप्रकार आत्मा में नास्तित्व–अवक्तव्य धर्म और अस्तित्व–नास्तित्व–अवक्तव्य धर्म भी है और इन्हें विषय बनानेवाले नास्तित्व–अवक्तव्यनय और अस्तित्व–नास्तित्व–अवक्तव्यनय भी हैं।

आत्मा के अस्तित्वधर्म, नास्तित्वधर्म, अस्तित्व–नास्तित्वधर्म, अवक्तव्यधर्म, अस्तित्व–अवक्तव्यधर्म, नास्तित्व–अवक्तव्यधर्म और अस्तित्व–नास्तित्व–अवक्तव्यधर्म ह्न इन सात धर्मों को विषय बनानेवाले क्रमश: अस्तित्वनय, नास्तित्वनय, अस्तित्व–नास्तित्वनय, अवक्तव्यनय, अस्तित्व–अवक्तव्यनय, नास्तित्व–अवक्तव्यनय और अस्तित्व–नास्तित्व–अवक्तव्यनय ह्न ये **सात** नय हैं।

उक्त सात नयों को समझाने के लिये आचार्यदेव ने बाण का उदाहरण दिया है। एक आदमी धनुष और बाण को लिये हुए है तथा वह आदमी धनुष के ऊपर बाण को खींचे हुए की अवस्था में है।

इसमें आचार्यदेव ने द्रव्य–क्षेत्र–काल और भाव को समझाया है। वे कहते हैं कि लोहे का बाण तो द्रव्य है; वह बाण धनुष पर चढ़ा हुआ है ह्न यह उसका क्षेत्र है; वह बाण संधानदशा में है ह्न यह उसका काल है और वह बाण लक्ष्योन्मुख है ह्न यह उसका भाव है।

इस उदाहरण में बात मात्र बाण की नहीं है, अपितु लोहे के बाण की बात है, धनुष के मध्य में स्थित बाण की बात है, संधानदशावाले बाण की बात है एवं लक्ष्योन्मुख बाण की बात है।

इसीप्रकार आत्मा भी स्वद्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव से हैं एवं परद्रव्य क्षेत्र–काल–भाव से नहीं है।

आत्मा में जो अस्तित्व नामक धर्म है, उसका काम आत्मा के अस्तित्व को कायम रखना है। आत्मा के नास्तित्वधर्म के कारण पर का आत्मा में प्रवेश संभव नहीं है। इसी धर्म के कारण आत्मा के चारों ओर एक वज्र की सी दीवार बनी हुई है, जिसके कारण परद्रव्य आत्मा में प्रवेश नहीं कर सकते। यह वज्र की दीवार मात्र बाहर–बाहर नहीं है, अपितु आत्मा के प्रत्येक प्रदेश पर खचित है अर्थात् भगवान आत्मा में ऐसी शक्ति विद्यमान है कि परद्रव्य उसमें प्रवेश नहीं कर सकते, उसी शक्ति का नाम नास्तित्व धर्म है। अस्तित्व–नास्तित्वधर्म आत्मा को ऐसी सामर्थ्य प्रदान करता है कि जिसके कारण आत्मा में अस्तित्व और नास्तित्व ह्न दोनों धर्म एकसाथ रहते हैं।

आत्मा के अवक्तव्य धर्म के कारण आत्मा की स्थिति वाणी में पूरी तरह नहीं आ सकती, यह वाणी की कमजोरी नहीं है, अपितु आत्मा का ही एक ऐसा धर्म है, जिसके कारण आत्मद्रव्य वाणी में पूर्णरूप से कहने में नहीं आ पाता।

'अस्तित्वधर्म और अवक्तव्यधर्म' ह्न ये दोनों आत्मा में एकसाथ रहें ह्न ऐसी सामर्थ्य को प्रदान करनेवाला अस्तित्व–अवक्तव्यधर्म है; इसीप्रकार 'नास्तित्वधर्म और अवक्तव्यधर्म' ह्न ये दोनों आत्मा में एकसाथ रहें – ऐसी सामर्थ्य को प्रदान करनेवाला नास्तित्व–अवक्तव्यधर्म है और 'अस्तित्वधर्म, नास्तित्वधर्म तथा अवक्तव्यधर्म' ह्न ये तीनों आत्मा में एकसाथ रहें ह्न ऐसी सामर्थ्य को प्रदान करनेवाला अस्तित्व–नास्तित्व–अवक्तव्यधर्म है।

विकल्पनय और अविकल्पनय का स्वरूप आचार्य अमृतचन्द्र इसप्रकार लिखते हैं ह्न

''विकल्पनयेन शिशुकुमारस्थविरैकपुरुषवत् सविकल्पम्, अविकल्पनयेनैकपुरुषमात्रवदविकल्पम्। ह्न आत्मद्रव्य विकल्पनय से बालक, कुमार और वृद्ध ह्न ऐसे एक पुरुष की भाँति सविकल्प हैं और अविकल्पनय से एक पुरुषमात्र की भाँति अविकल्प है।''

भगवान आत्मा में एक 'भेद' नामक धर्म है और एक 'अभेद' नामक धर्म भी है। भेद नामक धर्म को विकल्पधर्म कहते हैं और अभेद नामक धर्म को अविकल्पधर्म कहते हैं।

जिसप्रकार एक ही पुरुष बालक, जवान और वृद्ध ह्न इन अवस्थाओं का धारण करनेवाला होने से बालक, जवान एवं वृद्ध ह्न ऐसे तीन भेदों में विभाजित किया जाता है; उसीप्रकार भगवान आत्मा भी ज्ञान, दर्शनादि गुणों एवं मनुष्य, तिर्यंच, नरक, देवादि अथवा बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा आदि पर्यायों के भेदों में विभाजित किया जाता है।

जिसप्रकार बालक, जवान एवं वृद्ध अवस्थाओं में विभाजित होने पर भी वह पुरुष खण्डित नहीं हो जाता, रहता तो वह एकमात्र अखण्डित पुरुष ही है। उसीप्रकार ज्ञान–दर्शनादि गुणों एवं नरकादि अथवा बहिरात्मादि पर्यायों के द्वारा भेद को प्राप्त होने पर भी भगवान आत्मा रहता तो एक अखण्ड आत्मा ही है।

तात्पर्य यह है कि भगवान आत्मा में एक विकल्प नामक धर्म है, जिसके कारण आत्मा गुण–पर्यायों के भेदों में विभाजित होता है और एक अविकल्प नामक धर्म है, जिसके कारण आत्मा अखण्डित रहता है। भेद नामक धर्म को विषय बनानेवाला नय विकल्पनय है और अभेद नामक धर्म को विषय बनानेवाला नय अविकल्पनय है। इन विकल्प और अविकल्प नयों को क्रमश: भेदनय और अभेदनय भी कहा जा सकता है।

विकल्पनय और अविकल्पनय के बाद चार निक्षेपोंवाले नय हैं। जिनके नाम नामनय, स्थापनानय, द्रव्यनय और भावनय हैं। **(क्रमश:)**

17 जनवरी 2007, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

वैराग्य समाचार

1. भुसावल निवासी **श्री बाबूलालजी तोतारामजी जैन, लुहाडिया** का दिनांक 23 नवम्बर 06 को शाम 4 बजे 74 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप जिनधर्म के प्रचार-प्रसार में सदैव तत्पर रहते थे। समय-समय पर आपने लाखों रुपयों के सत्साहित्य घर-घर पहुँचाये। भुसावल में दि. जैन मंदिर (नूतन) में आपने जिनवाणी हॉल, त्यागी निवास, रंगमंच, सभागृह का निर्माण कराया एवं अपने अक्षय जीवन बीमा पॉलिसी के तीन लाख रुपये भी मंदिर को दान दिये।

2. अशोकनगर निवासी **पण्डित बाबूलालजी लालोनी** का दिनांक 14 दिसम्बर, 06 को शान्त परिणामों से देहावसान हो गया है। आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के माध्यम से प्रतिवर्ष दसलक्षणादि कार्यक्रमों में प्रवचनार्थ आते-जाते रहते थे। आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री केवलचन्द अशोककुमार लालोनी की ओर 151/- रुपये प्राप्त हुये।

3. विहिगाँव (महा.) निवासी **श्री मदनलालजी जैन** का 27 नवम्बर 06 को 81 वर्ष की आयु में देहविलय हो गया है। आप स्मारक ट्रस्ट के माध्यम से प्रवचनादि हेतु अपनी नि:स्वार्थ सेवायें समाज को देते थे। आपकी स्मृति में दिनेशकुमार जैन द्वारा 101/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाण की प्राप्ति करें - यही भावना है।

आवश्यकता

इन्दौर (म.प्र.) : श्री माणकचन्द हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास, गाँधीनगर इन्दौर को धार्मिक पाठशाला में अध्यापन, शास्त्र प्रवचन एवं मंदिर की सामान्य व्यवस्था हेतु विद्वान की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार एवं आवास सुविधा संस्था द्वारा उपलब्ध कराई जायेगी। साक्षात्कार हेतु बुलाये जानेवाले विद्वान को रेल/बस का सामान्य श्रेणी का किराया दिया जायेगा।

इच्छुक व्यक्ति 31 जनवरी, 07 तक आवेदन संबंधी प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपि फोन नंबर सहित निम्न पते पर भेजें। ह्न **प्रकाश छाबड़ा,**
53 मल्हारगंज, मेन रोड़, इन्दौर, फोन: 0731-3014280

सविनय आमंत्रण

रानीला (हरि.): श्री 1008 भगवान आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र आदिनाथपुरम्, रानीला, तह. चरखीदादरी, जि. भिवानी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव राष्ट्रसंत सिद्धान्त चक्रवर्ती 108 आचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज के मंगल आशीर्वाद, मार्ग-दर्शन एवं सान्निध्य में 23 फरवरी से 1 मार्च, 07 तक आयोजित होने जा रहा है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सपरिवार, इष्ट-मित्रों सहित पधारने हेतु सविनय आमंत्रण है। ह्न **प्रबन्धकारिणी, मंत्री-वी. के. जैन**

हार्दिक बधाई

1. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी. सी.) नई दिल्ली द्वारा लेक्चरशिप के लिये आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री विनीतजी शास्त्री ग्वालियर ने सफलता प्राप्त की । ज्ञातव्य है कि आप हिन्दी से एम.ए. एवं जैनदर्शनाचार्य कर चुके हैं।

आपकी इस सफलता के लिये जैन पथप्रदर्शक समिति एवं महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

2. श्री धनसिंहजी जैन पिड़ावा की सुपुत्री सौ. का. शुद्धात्मप्रभा के विवाह (13 दिसम्बर-06) प्रसंग पर जैनपथप्रदर्शक समिति की ओर से हार्दिक बधाई। आपकी ओर से 100/- रुपये की दानराशि प्राप्त हुई। ज्ञातव्य है कि आप महाविद्यालय के विद्यार्थी विवेक शास्त्री की बहिन हैं।

64 ऋद्धि एवं शांति विधान

कैराना (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर में नववर्ष के पावन अवसर पर श्री 64 ऋद्धि विधान एवं शांति विधान का चार दिवसीय आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगाँमा एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा ने सम्पन्न कराये। विधान के अतिरिक्त प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी हुआ।

(आगामी कार्यक्रम ...)

सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका शिविर

देवलाली (नासिक-महा.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 14 से 18 मार्च, 07 तक पंच दिवसीय सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविर में डॉ. उज्ज्वलाजी शहा के प्रतिदिन लगभग 6 घण्टे के व्याख्यानों का लाभ मिलेगा।

सभी साधर्मीजनों को शिविर में भाग लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है। आवास एवं भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था रहेगी। ह्न **समस्त ट्रस्टीगण**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
फैक्स : (0141) 2704127